शेयर मार्किट में मुनाफे के मंत्र

सुधा श्रीमाली

शेयर मार्केट में मुनाफे के मंत्र

सुधा श्रीमाली

प्रभात प्रकाशन, दिल्ली
ISO 9001:2008 प्रकाशक

उन लाखों भारतीय निवेशकों को,
जिनकी भविष्योन्मुख की अनेक योजनाएँ
शेयर मार्केट के मुनाफे पर
आश्रित रहती हैं।

भूमिका

सुधा श्रीमाली की नवीनतम पुस्तक फुटकर निवेशकों के लिए भारतीय पूँजी बाजार के बारे में जानकारी हासिल करने के लिहाज से एक महत्त्वपूर्ण कृति है। 25 वर्षों से फुटकर निवेशकों के साथ काम करने के अनुभव के आधार पर मैं निवेश की बुनियादी बातों को समाहित करनेवाली इस पुस्तक की सराहना करता हूँ। इक्विटी मार्केट के ढाँचे और कार्यप्रणाली पर आधारित उनकी पूर्व पुस्तक की सफलता के बाद, अब उन्होंने निवेश की प्रक्रिया के व्यापक उतार-चढ़ावों को अपना विषय बनाया है। सुधा श्रीमाली फुटकर निवेशकों के मनोविज्ञान को बेहतर समझती हैं। उन्होंने इसका मुक्त एवं प्रवाहयुक्त भाषा में वर्णन किया है, जो पाठकों को मंत्रमुग्ध किए रहता है। मुझे विश्वास है कि निवेशकों को इस पुस्तक को पढ़ने में आनंद आएगा और मार्केट तथा निवेश के बारे में उठनेवाले उनके हजारों संदेह दूर होंगे।

स्टॉक मार्केट के बारे में साड़ी बातचीत इसके लाभ-हानि के खेल पर खत्म हो जाती है। निवेश एक गंभीर विषय है, जिसके लिए निवेशक के निर्णयों को आकार देनेवाले अनुशासित प्रक्रिया कि आवश्यकता होती है। यह एॅकेट विज्ञान नहीं है, जो कुछ सार्वभौमिक अपील बढ़ानेवाली आम धारणाओं तक सिमित हो।

हमारे स्टॉक मार्केट की उत्पत्ति और बियर एंड बुल के चक्र पर आधारित इसकी यात्रा को जानना-समझना नए तथा पुराने निवेशकों के लिए शिक्षाप्रद होगा। यह बाजार के बारे में निवेशकों की समझ को व्यापक बनती है और उन्हें तर्कसंगत अपेक्षाओं के लिए तैयार करती है। इतिहार में ऐसे कई उदाहरण हैं, जहाँ फहुतकर निवेशकों ने करकहिं अपेक्षाएँ करके अपने हाह जला लिए।

छोटे निवेशकों को यह समझना होगा कि स्टॉक मार्केट कोई जैकपोट जितने कि जगह नहीं है। हालांकि यह सही है कि हमारे समय के कई सफल निवेशकों ने काफी धन कमाया है, लेकिन ऐसा अक्सर कई दशकों के व्यवस्तिथ तथा अनुशासित निवेश से ही हो पाया है। निवेश करने कि प्रक्रिया को समझने की आवश्यकता है। संपन्न वर्गों में और उनके बीच विविधता ऐसे प्रमुख विचार हैं, जिन्हें अपनाया जाना चाहिए। हालाँकि हर कोई इसमें महारत हासिल नहीं कर सकता, लेकिन सभी निवेशकों में इतनी समझ तो होनी ही चाहिए कि वे अपने सलाहकारों से सही प्रश्न पूछ सकें।

मुझे एक पुरानी चीनी कहावत याद आ रही है, अगर आप किसी को एक मछली देते हैं तो आप तत्कालीन भूक कि चिंता करते हैं। पर अगर आप उसे मछली पकड़ना सिखाते हैं तो आप उसे अपने पुरे जीवन की देखभाल करना सिखाते हैं। यह फुटकर निवेशकों के लिए अधिक सही नहीं हो सकता। स्टॉक मार्केट के बारे में उन्हें सलाह देना आसान हो सकता है, लेकिन इससे निवेशकों को प्रबुद्ध बनाने में सहायता नहीं मिलेगी। अभी फुटकर इक्विटी वाला वर्ग अपनी प्रारंभिक अवस्था में है, इसलिए निवेशकों को इस बात के लिए शिक्षित करने के किए ठोस प्रयास करने की आवयश्कता जय, जिससे वे विकासशील अर्थव्यवस्था की वित्तीय चुनौतियों का सामना कर सकें।

श्री दिनेश ठक्कर

(CMD, Angel Broking Ltd.)

अनुक्रमणिका

1. शेयर बाजार की कहानी
2. क्या है शेयर बाजार?
3. नए निवेशक : समस्याएँ और समाधान
4. शेयर बाजार में उथल-पुथल की कहानी
5. पोर्टफोलियो मैनेजमेंट क्या है?
6. निवेश के विकल्प
7. सुरक्षित हो सकता है शेयरों में निवेश
8. कंपनी के रिपोर्ट कार्ड से जानें शेयर का हाल
9. बी.एस.ई. पर शेयरों के कितने समूह हैं?
10. राइट्स इश्यू, शेयर विभाजन और ओपन ऑफर?
11. बायबैक का फंडा
12. सर्किट व वैल्यू एवरेजिंग क्या है?
13. किस तरह होता है टेक्निकल एनालिसिस?
14. निवेश के बुनियादी सूत्र क्या हैं?
15. निवेश करते वक्त इन सबका हमेशा ध्यान रखें
16. थोड़ा-थोड़ा निवेश करके बनाएँ बड़ी रकम
17. इक्विटी में निवेश का आसान जरिया है म्यूचुअल फंड
18. म्यूचुअल फंड में जोखिम घटाने का तरीके
19. डेट में निवेश के विकल्प
20. जोखिम तो है, फिर भी एफ.एम.पी. फायदे का सौदा
21. निवेशकों के लिए तिमाही नतीजें के मायने
22. म्यूचुअल फंड आँकने का पैमाना?
23. कैसे चुनें बेहतरीन म्यूचुअल फंड?
24. क्यो सुरक्षित है म्यूचुअल फंड
25. म्यूचुअल फंड : सावधानी बरतें
26. निवेशकों के आकर्षक का केंद्र

27. फंड प्रश्नोत्तरी
28. शेयर शब्दावली

उपयोगी पत्र-पत्रिकाएँ एवं वेबसाइट्स

1

शेयर बाजार की कहानी

1875 में एसोसिएशन के रूप में स्थापना

मुंबई शेयर बाजार का जन्म एक एसोसिएशन के रूप में सन् 1875 में हुआ था, जिसका नाम था ‘नेटिव शेयर एंड स्टॉक ब्रोकर एसोसिएशन’। इसके पूर्व शेयरों का सौदा शुरू हो चुका था। 1840 में शेयर दलाल एक वृक्ष के नीचे खड़े होकर शेयरों की खरीद-बिक्री करते थे। वहीं से एसोसिएशन बनाने की रूपरेखा आकार में आई और इसी विचार से एक ऐतिहासिक घटना साकार हुई। भारत उस दौरान ब्रिटिश शासन के अधीन था। 18 जनवरी, 1899 के दिन ब्रिटिश उच्चाधिकारी जे.एस. मेक्लिन द्वारा मुंबई के नेटिव शेयर दलालों के लिए उच्चारित किए गए शब्दों को आज भी गौरव के साथ याद किया जाता है। मेक्लिन के सिद्धांत का तात्पर्य यह था कि मुंबई के नेटिव शेयर दलाल समाज के अभिन्न अंग हैं, जिनको उचित सम्मान नहीं मिलता, परंतु उनके दोषों का ही आकलन किया जाता है। किसी अपवाद के अलावा ये शेयर दलाल प्रामाणिक रहे हैं। उनको भले ही कितना भी नुकसान झेलना पड़ा हो, लेकिन उन्होंने अपने ग्राहकों की पाई-पाई चुकाई है। भारत में पूँजी का यह सबसे बड़ा बाजार है। मुंबई पोस्ट ट्रस्ट एवं मुंबई म्यूनिसिपल्टी जैसी संस्थाओं को नीचे से ऊपर उठाने में सहायक रहा है। वर्तमान में मुंबई के सृजन में इस नेटिव शेयर दलालों की उल्लेखनीय भूमिका है। यह सिद्धांत 21वीं सदी में भी मुंबई के शेयर दलालों के लिए यथार्थ रहा है। अलबत्ता अपवाद तो हमेशा किसी-न-किसी स्वरूप अथवा मात्रा में प्रकट होते रहते हैं।

विश्व का पहला स्टॉक एक्सचेंज

विश्व के पहले शेयर बाजार का जन्म बेल्जियम में हुआ था, ऐसी मान्यता है। बेल्जियम के एंटवर्प शहर में सन् 1531 में बाजार के मुख्य विस्तार के लिए कई व्यापारी इकट्ठा हुए थे। वे शेयर तथा कमोडिटीज में सट्टा करते थे। विश्व का पहला संगठित स्टॉक एक्सचेंज 1602वें वर्ष में एम्सटर्डम में स्थापित हुआ। 18वीं सदी के अंत में न्यूयार्क स्टॉक एक्सचेंज अस्तित्व में आया, जो आज विश्व के शक्तिशाली एक्सचेंजों में गिना जाता है। भारत में इस समय के दौरान हुंडी तथा बिल ऑफ एक्सचेंजों की खरीद-बिक्री व्यापारी वर्ग की सामान्य प्रवृत्ति मानी जाती थी।

प्रथम शेयर मेनिया

सन् 1850 में भारत सरकार ने कंपनीज एक्ट-1850 पारित किया और शेयर ट्रेडिंग का एक नया मार्ग खुला। नया इसलिए, क्योंकि उसके पहले भी शेयरों का सौदा तो होता था, लेकिन नाममात्र के लिए। ट्रेडिंग के लिए बड़ी संख्या में शेयर उपलब्ध हुए बिना इस प्रवृत्ति को गति मिलना संभव नहीं था। उन दिनों में कॉमर्शियल बैंक, चार्टर्ड बैंक, दि ओरिएंटल बैंक एवं बैंक ऑफ बॉम्बे जैसे मुख्य बैंक स्टॉक जैसे कुछ शेयर ही उपलब्ध होते थे। लोगों में भी शेयर में निवेश करने के लिए लगाव नहीं था। शेयर ट्रेडिंग प्रवृत्ति का प्रमाण भी कम रहता था और यह सिर्फ 6 शेयर दलालों द्वारा चलाया जा रहा था। उस समय न तो ट्रेडिंग हॉल था और न ही शेयर बाजार का मकान। इसके लिए आवश्यक पूँजी भी नहीं थी। इसके बावजूद वर्ष 1860 तक शेयर दलालों की संख्या 60 तक पहुँच गई थी। 1860 में एक ऐसे व्यक्ति प्रकाश में आए, जिन्होंने ‘शेयर मेनिया’ को जन्म दिया। उनका नाम था प्रेमचंद रॉयचंद। वे पहले भारतीय शेयर दलाल थे, जो अंग्रेजी लिख-पढ़ सकते थे।